रचनात्मक विचार जीवन की दिशा बदल देतें हैं

जीवन निर्माण में विचारों का बड़ा महत्व है। वेदों में लिखा है - विचार से प्राण बल पाते हैं। अंग्रेजी कहावत है -

As a man thinks in his heart so is he.

यानी मनुष्य हृदय से जैसा विचार करता है, वह वैसा ही बनता है। श्रेष्ठ व रचनात्मक विचारों से ही जीवन में सफलता मिलती है। मनुष्य जैसी कल्पनाएं करता है उसका भाग्य भी वैसा ही बनता है। विचार करना मनुष्य के मन का धर्म है। सफलता के लिए विचारों को एकाग्र करना आवश्यक है। जिस प्रकार पानी की बूंदे एक ही स्थल पर गिरती हुई पत्थर को भी तोड़ देती हैं उसी प्रकार विचारों की निरन्तर एकाग्रता संसार की प्रत्येक बाधा का सामना कर सकती है।

मानसिक शक्तियों में विचार शक्ति का स्थान प्रमुख है। विचारों का केन्द्रीकरण भी आवश्यक है। आपने देखा होगा कि सूर्य की रश्मियां किसी वस्तु को नहीं जला सकतीं परन्तु लैंस की सहायता से केन्द्र बिन्दु पर केन्द्रित हुई वही किरणें लोहे को भी पिघला देती हैं। विचारों के केन्द्रीकरण में भी इसी प्रकार एक विशाल शक्ति निहित है। विचारों को एक स्थान पर केन्द्रित करना चाहिए। अस्थिर व डगमगाते विचार मस्तिष्क में नहीं लाने चाहिए।

वेदों में लिखा है - प्रत्येक दिशा से शुभ एवं सुन्दर विचार हमें प्राप्त हों, मस्तिष्क में पुष्ट एवं स्वस्थ विचारों को स्थान दीजिए, कार्य में सफलता के बारे में उत्पन्न् संशय, शंका एवं अविश्वास को त्याग दीजिए। संशयात्मक विचारधारा मनुष्य को अवनति की ओर ले जाती है। मस्तिष्क को सदैव हल्का रखिए। विचारों को स्वतंत्र एवं बन्धनमुक्त रखिए। यूरोप के प्रसिद्ध दार्शनिक लेखक इमर्सन ने एक स्थान पर लिखा है - "विचारों को स्वतंत्रा दीजिए, विचार कामनाओं का रुप धारण कर लेंगें, कामनाओं को स्वतंत्र मार्ग दीजिए, वे कार्य में परिणित हो जायेंगी, कार्यों को स्वतंत्रता दीजिए, आदतें बन जायेंगीं, आदतें ही कुछ दिन बाद चरित्र के रुप में प्रकट होगी, वही चरित्र मनुष्य के भाग्य का निर्माण करेगा।"

विचार मनुष्य के मन और शरीर पर अपना स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। शुभ विचार मनुष्य को सदैव आत्म-विश्वास की ओर ले जाते हैं। जिस समय में आप विचारों में उच्चता लाने का प्रयास करेगें, वही समय आपके जीवन का महत्वपूर्ण समय होगा। आत्मोन्नति के लिए शुभ विचारों को स्थान देना एवं उनके अनुरुप ही जीवन ढालना आवश्यक है। विचारों में ही जीने का दूसरा नाम अन्तर्मुख होना है। अन्तर्मुख होते ही आपके अभीष्ट आदर्शों का चित्र आपके मानस पटल पर खिच जाएगा।

श्री सत्यकाम विद्यालकर ने विचारों के बारे में एक जगह लिखा है - "हमारा भाग्य विचारों से ही बनता है। यदि हम अपनी आत्मा की गहरी खान में खोज करें तो हमें जगत का प्रत्येक सत्य अपने से सम्बन्धित मालूम होगा। यही सत्य है, हम भी विश्व की आत्मा के ही अंग हैं। विषय भोग की लालसा में हम इस सच्चाई को भूल जाते हैं। विचार जगत में आकर हम फिर विश्वात्मा के निकट पहुँच जाते हैं। जिज्ञासु होकर ही मनुष्य ज्ञान-मन्दिर में प्रवेश पाता है। सत्य विचारक ही निष्काम कर्मयोगी बनता है। जिसका हृदय घृणा कामवासना एवं अभिमान से रहित हो, वही सच्चा विचारक है। कुविचारों की कल्पना से स्वस्थ व्यक्ति रोगी हो जाता है एवं विद्वान मूढ़ बन जाता है। इसके विपरीत शुभ विचारों वाला व्यक्ति तुच्छता से महानता की ओर अग्रसर होता है। मनुष्य जैसा विचार करता है, वैसा ही उसका संसार क्षेत्र बनता है।

राकेश गोयल, "तकनीशियन - द्वितीय"

जैसे हमारे विचार हैं, संकल्प हैं, उन्हीं के अनुसार हमारे जीवन का निर्माण होता है। विचार ही इच्छा शक्ति को उत्प्रेरित करते हैं। हम जिसके बारे में दृढ विचार और विश्वास रखते है, उसे अवश्य प्राप्त करते है। उत्साहवर्द्धक विचार जीवन के सघर्षों को सामना करने में सर्वाधिक सहायता पहुंचाते हैं।

नैराश्य, हीन भावना, भीरुता अकर्मण्यता एवं निरुत्साह आदि को छोड़ देना चाहिए। स्वभाव से ही सरस, सहृदय और सजीव बनिए। जीवन की उपमा सरिता से दी जा सकती है। उसे शुष्क नही होना चाहिए, निरन्तर सरस ही रहना चाहिए। आशामय विचार आपकी समस्त मानसिक शक्तियों को एकत्र करके कार्य में नियोजित कर देते हैं।

निरन्तर उच्चता की ओर जाने के विचार मन में संजोए मनुष्य मात्र के लिए वेद का एक सुन्दर आदेश है - हे पुरुष ! तुझे ऊपर उठना है, न कि नीचे गिरना। आत्मा की अमरता को स्वीकार कीजिए। आत्मविश्वास, उत्साह, पुरुषार्थ, रुचि और आशावान विचारों को मस्तिष्क में स्थान दीजिए।

****

कुछ लोग कहते हैं देश पहले और धर्म बाद में, कुछ कहते हैं धर्म पहले और देश बाद में लेकिन, मैं कहता हूं देश हीं पहले और देश ही बाद में। — डा. अंबेडकर

जब तक लाख लोग भूखा और अज्ञान के कारण मरते हैं, तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को गद्दार समझता हूं जो उनकी कीमत पर शिक्षित हुआ है किन्तु उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। — विवेकानन्द

अन्धा विश्वास कमजोर मनों की दुर्बलता है। — एडमण्ड वर्क

किसी दूसरे के दुख को दूर करने के लिए अपने दर्द को भुला देना पड़ता है। — अब्राहम लिंकन

ज्ञान ही शक्ति है। — होब्ज

किसी बात को सिर्फ इस लिए मत मानो कि वह शास्त्रों में लिखी है या परम्परा से चली आ रही है या किसी गुरु ने कही है बल्कि सिर्फ तभी मानों जब वह तर्क की कसौटी पर खरी उतरती हो और मानवहित में हो। — गौतम बुद्ध

****